श्रीफल

आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज | आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज | आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी महाराज | अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज | स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी

• मंगलवार, 20 फरवरी 2024 • कुल पृष्ठ - 02

सुविचार

"दूसरों के कारण हम कषाय करते हैं, जिससे अशुभ कर्म का बंध होता है। ऐसे लोगों की बातों, आचरण और विचारों को इग्नोर यानी अनदेखा करना शुरू करें, तभी बुद्धि और मन निर्मल और शांत होगा।"

- अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज

जो आचार्यश्री ने दिया, उसे आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि

रेखा जैन
संपादक श्रीफल जैन न्यूज

शनिवार की रात लगभग 2: 35 बजे जब डोंगरगढ़ में आचार्यश्री विद्यासागर का समतापूर्वक समाधिमरण हुआ तो देश-विदेश में आचार्य श्री के तमाम भक्तों की अश्रुधारा बह चली। उनके मुंह से बस यही निकल रहा था कि यह क्या हो गया, यह आघात वह कैसे सहन करेंगे। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से लेकर आम जन तक इसे समाज, देश के लिए अपूरणीय क्षति बता रहे हैं। देश के कोने- कोने से श्रावक अंतिम दर्शन के लिए डोंगरगढ़ पहुंचे। समूचे देश में जैन समाज के व्यापारियों ने अपने प्रतिष्ठान और संस्थान बंद रखे तो कुछ राज्यों में सरकार ने आधे दिन का राजकीय शोक भी रखा। देश में अधिकतर जगह सामाजिक स्थलो, मंदिरों में श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन कर आचार्य श्री को विनयांजलि अर्पित की, यह सिलसिला आज तक जारी है। आध्यात्मिक दृष्टि से आचार्य श्री ने युवाओं को भोग से दूर कर आत्मकल्याण के मार्ग पर लगाया। यही वजह है कि उनके द्वारा दीक्षित साधुओं की संख्या 500 से भी अधिक है, जो धर्म की प्रभावना कर समाज को संस्कार और संस्कृति से जोड़ रहे हैं। आचार्य श्री ने अनेक मंदिरों का निर्माण करवा कर धर्म के संस्कृति को हजारों वर्ष के लिए सुरक्षित रख दिया। समाधिमरण से पूर्व आचार्य श्री अपना उत्तराधिकारी भी निश्चित कर गए। उन्होंने मुनि समय सागर महाराज को आचार्य श्री पदवी दी है। अब मुनि श्री समय सागर जी के प्रति भी उतनी आस्था, श्रद्धा रखते हुए हमें अपने कर्तव्य का पालन करना होगा। आचार्य श्री ने समाज,देश की संस्कार और संस्कृति को सुरक्षित रखने के लिए अनेक अभियानों की शुरुआत करवाई। गौशाला की स्थापना कर भारत की संस्कृति को बताया। इंडिया नहीं, भारत बोलो... एक देश एक नाम हो... इस बात का एहसास करवाया। प्रतिभास्थली की स्थापना से बालिकाओं को संस्कार, संस्कृति से परिवार का पालन-पोषण करने केसाथ भगवान आदिनाथ का उपदेश दिया है क्यों उन्होंने सब से पहले अपनी दोनो पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को अंक और विद्या ज्ञान दिया। पूर्णायु आयुर्वेद संस्थान स्थापित कर उन्होंने भारतीय संस्कृति से निकलीज आयुर्वेदिक चिकित्सा को बढ़ावा देने के लिए संकेत दिया। अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज ने भी श्रद्धांजलि सभा में कहा था कि आचार्य श्री ने धार्मिक और सामाजिक संरक्षण के लिए अनेक अभियान चलाए हैं, अब कोई नया अभियान चलाने के बजाए आचार्यश्री द्वारा चलाए गए अभियानों को कैसे आगे बढ़ाया जाए, उस पर समाज, साधु, विद्वान लोगों का चिंतन होना चाहिए, यही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दिखाया श्रम और स्वावलंबन का मार्ग

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने चरखा और खादी के जरिए स्वरोजगार का सपना संजोया था और उसे नई रोशनी मिली आचार्य विद्यासागर के प्रयासों से। इसका उदाहरण बना मध्य प्रदेश के सागर जिले का 'बीना बारहा' गांव, जिसकी पहचान ही 'हथकरघा' बन न गया है। यहां बनने वाले कपड़े का ब्रांड नाम है 'श्रमदान'।

आचार्य विद्यासागर महाराज की पहल से बुंदेलखंड में कई जगह हथकरघा उद्योग फल-फूल रहा है। दमोह के कुंडलपुर क्षेत्र में श्रमदान हथकरघा प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया गया है। कुंडलपुर जैन तीर्थ भी अब हथकरघा प्रशिक्षण के लिए भी जाना जाने लगा है. यहां से प्रशिक्षण लेकर सैकड़ों ग्रामीणों को अच्छी आय होने लगी है। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज ने दमोह, सागर सहित बुंदेलखंड में जगह-जगह हथकरघा केंद्र खुलवाए हैं।

आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज का परिचय एक नजर में

पूर्व नाम : श्री विद्याधरजी

पिताश्री : श्री मल्लप्पाजी अष्टगे (मुनिश्री मल्लिसागरजी)

माताश्री : श्रीमती श्रीमंतीजी (आर्यिकाश्री समयमतिजी)

भाई/बहन : चार भाई, दो बहन

जन्म स्थान : चिक्कोड़ी (ग्राम- सदलगा के पास), बेलगांव (कर्नाटक)

जन्मतिथि : आश्विन शुक्ल पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) वि.सं. 2003, 10-10-1946, गुरुवार, रात्रि में 12.30 बजे।

जन्म नक्षत्र : उत्तरा भाद्रपद।

मातृभाषा : कन्नड़।

शिक्षा : 9वीं मैट्रिक (कन्नड़ भाषा में)

ब्रह्मचर्य व्रत : श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, चूलगिरि (खानियाजी), जयपुर (राजस्थान)

प्रतिमा : सात (आचार्यश्री देशभूषणजी महाराज से)

स्थल : 1966 में श्रवणबेलगोला, हासन (कर्नाटक)

मुनि दीक्षा स्थल : अजमेर (राजस्थान)

मुनि दीक्षा तिथि : आषाढ़ शुक्ल पंचमी, वि.सं. 2025, 30-06-1968, रविवार

आचार्य पद तिथि : मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया- वि.सं. 2029, दिनांक 22-11-1972, बुधवार

आचार्य पद स्थल : नसीराबाद (राजस्थान) में, आचार्यश्री ज्ञानसागरजी ने अपना आचार्य पद प्रदान किया।

समाधिमरण : चंद्रगिरी डोंगरगढ़ (छत्तीसगढ़) 18 फरवरी 2024

यों ही नहीं दी गई थी जीवित भगवान की संज्ञा

श्रम और अनुशासन की अग्नि में तपकर ही आचार्य श्री इतने महान बने कि उन्हें धरती पर जीवित भगवान की संज्ञा दी गई। आचार्य श्री विद्यासागर महाराज धर्म प्रभावना में किस कदर लीन थे, क्यों उन्हें जीवित भगवान कहा जाता था और कैसे वह तत्पर आध्यात्मिक मार्ग पर लोगों को चलने के लिए प्रेरित कर देते थे, इसे हम उनके जीवन के तीन प्रसंगों से समझ सकते हैं..

1. एक रोज वह आहारचर्या के बाद कमंडल लेकर जा रहे थे। तभी आचार्य श्री को डॉ. ऋषि भैया मिले। वह बोले, महाराज जी मैं मुनि कब बन पाऊंगा। वह चौदस का दिन था तो आचार्य श्री ने सुबह11:45 बजे प्रत्याखान दिया और दोपहर एक बजे दीक्षा हो गई। इस तरह से आचार्य श्री से एक निवेदन करते ही डॉ. ऋषि भैया मुनि शीतलसागर जी महाराज हो गए।

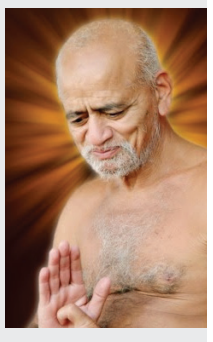

2. नैनागिरी में चंदेल काल में बने महावीर तालाब में पानी की बहुत कमी थी। वहां आचार्य श्री विद्यासागर महाराज के सानिध्य में पंचकल्याणक होने जा रहा था। आचार्य श्री वहां विहार कर आए तो उन्होंने घाट पर पैर धोए। तालाब में इतना पानी निकला कि पूरे पंचकल्याणक में पानी की बिल्कुल कमी नहीं हुई। जैसे ही पंचकल्याणक खत्म हुआ, वहां एक बार फिर सूखा दिखाई देने लगा।
3. गुजरात के तारंगाजी स्थित श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र में एक गुफा है, जो जिनालय मंदिर के पीछे है। आचार्य श्री वहां हमेशा रुकते थे। एक दिन सामायिक का वक्त था। संघ के सभी महाराज सामायिक के लिए बाहर बैठे हुए थे लेकिन आचार्य श्री गुफा में अंदर बैठे हुए थे। उनके साथ सुरेश भैया वहीं पर बैठे थे। अचानक तीव्र रोशनी हुई। एक प्रकाशपुंज गुफा में आया और वहीं समा गया। हैरान सुरेश भैया ने पूछा कि महाराज जी यह क्या है तो उन्होंने कहा कि वह अपना काम कर रहे हैं, तुम अपना काम करो। यानी देव भी आकर आचार्य श्री की वैयावृत्ति करते थे।

सामाजिक उत्थान में अग्रणी दूरदृष्टा थे आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

आचार्य श्री विद्यासागर जी जैसा व्यक्तित्व बड़े पुण्य से मिलता है। आचार्य श्री ने जिस दूरदृष्टि के साथ समाजोत्थान के लिए कार्य किया है, वह वास्तव में आत्म कल्याण के साथ सामाजिक कल्याण के लिए उपयोगी सिद्ध हुआ है और आगे भी होता रहेग। आचार्य श्री ने न केवल पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा वर्ग को आध्यात्मिकता से जोड़ा, बल्कि अनेक कम उम्र युवाओं को दीक्षित करके संपूर्ण जगत को संदेश दिया कि आध्यात्मिक क्षेत्र में ही वास्तविक शांति प्राप्त की जा सकती है।

वह मानते थे कि बेटियां अगर संस्कार विहीन शिक्षण प्राप्त करेंगी तो दिग्भ्रमित हो कुल, परिवार, समाज को संस्कारों से रहित कर देंगी। इसीलिए उन्होंने प्रतिभा स्थली जैसी संस्थाओं की स्थापना कराकर बेटियों को कुसंस्कारों से बचाने का कार्य किया, जो समाज में संस्कार व संस्कृति बढ़ाने का कार्य करेगा। जीव दया का संदेश देते हुए उन्होंने अनेक गौशालाओं की स्थापना की। आचार्य श्री ने अपनू आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ जो साधना की है, वह युगों-युगों तक सबके दिलो-दिमाग में जीवित रहेगी। यह निश्चित है कि न केवल वर्तमान पीढ़ी बल्कि आने वाली पीढ़ी भी उनकी इस साधना का गुणगान करेगी।

आचार्य श्री के चलाए हाथकरघा अभियान के करण आज मध्यप्रदेश की कई जेलों में कैदी हाथकरघा से जुड़े हैं। वे न केवल जेलों में बल्कि वहां से बाहर आने के बाद भी अपने पाप कर्मों को छोड़कर परिवार का पालन- पोषण कर रहे हैं। आचार्य श्री ने इसी भावना से हाथकरघा अभियान को प्रारंभ किया कि व्यक्ति स्वावलंबी बने और साथ ही समाज में रोजी-रोटी कमाने के लिए जिस प्रकार से अनेक कुरीतियां व्याप्त हैं, वे भी दूर हों। आचार्य श्री के इस अभियान का व्यापक प्रभाव भी हमें दिखाई दिया है, कई कैदी सजा पूरी कर बाहर आने के बाद सात्विक जीवन जी रहे हैं।

उन्हीं की प्रेरणा से जबलपुर में महिलाओं के लिए पुर्णायु आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं अनुसंधान विद्यापीठ की स्थापना की गई, जहां प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति के अनुसार चिकित्सा शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां से निकली महिला वैद्य पूरे देश में कई जगह आयुर्वेद का प्रचार-प्रसार कर रही हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज एक अच्छे आध्यात्मिक गुरु भी थे और एक उच्च कोटि के शिक्षक भी। उन्होंने अपने शिष्यों को पिता तुल्य प्रेम देकर उन्हें मोक्ष मार्ग पर लगाया। देश-विदेश में धर्म प्रभावना के लिए अनेक शिष्यों को तैयार किया। संस्कार शिविरों का आयोजन, जिनालयों के संरक्षण के पहल कर जैन समाज के इतिहास को सुरक्षित रखने का जो प्रभावी कार्य किया, वह सदियों याद रखा जाएगा। उनकी प्रेरणा से देश भर में अनेक नवीन जिनालयों का निर्माण भी किया।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज जैसा व्यक्तित्व न केवल संपूर्ण जैन समाज बल्कि सारे देश के लिए गौरव का विषय था। उन्होंने युवाओं को संस्कार और संस्कृति से जोड़ने के लिए केवल दीक्षाएं ही नहीं दीं, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान भी दिया। उन्होंने बच्चे, बड़े, बुजुर्गों को अनेक सामाजिक- धार्मिक कार्यों से जोड़ा, ताकि वे समाज में फैल रही कुरीतियों को दूर करके देश भर में संस्कार और संस्कृति की सतत धारा प्रवाहमान कर सकें।

वे हमेशा प्रवचनों में ये संदेश देते थे...

1. इंडिया नहीं, भारत बोलो, 2. शाकाहार अपनाओ, गोवंश की हत्या रोको 3. स्वदेशी को बढ़ावा दो 4. हिंदी को अनिवार्य करो 5. समाज में संपन्न लोग दो गरीब बच्चों को गोद लेकर पढ़ाएं 6. पर्यावरण की सुरक्षा हमारा दायित्व है 7. ईर्ष्या कभी मत करो, स्वयं आगे बढ़ो 8. हथकरघा के माध्यम से युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाएं 9. दूसरों की भलाई के लिए सुखों का त्याग ही सच्ची सेवा है 10. अहिंसा और जियो व जीने दो-सूत्र का पालन करें।

आचार्यश्री के गुरु ने जब उन्हें अपना गुरु बनाया

आचार्यश्री संभवतः इकलौते पहले संत हैं , जिन्हें उनके गुरु ज्ञान सागर महाराज ने समाधि मरण से पहले आचार्य पद सौंपा। उसकी प्रक्रिया संपन्न कराई और इसके बाद उनके सानिध्य में ही उन्होंने समाधि ली।

भोपाल के जैन समाज के ब्रह्मचारी अविनाश भैया ने इसकी पुष्टि की और कहा कि आचार्य ज्ञान सागर महाराज ने समाधि लेते समय अपना आचार्य पद विद्यासागर महाराज को सौंप दिया था। तब 1972 में आचार्यश्री की आयु 26 साल थी।

ये प्रकल्प आचार्यश्री के मार्गदर्शन में चले

गोसेवा, मातृभाषा हिन्दी, बालिका शिक्षा, आयुर्वेद, हथकरघा, इंडिया नहीं, भारत बोलो, मांस निर्यात बंद करो सहित कई विषयों-प्रकल्पों के लिए उनका मार्गदर्शन समाज को मिला।

कविता का शौक... कुछ सालों से जापानी कविता लिख रहे थे

आचार्यश्री कुछ साल से जापानी हायकू (कविता) लिख रहे थे। हायकू जापानी छंद की कविता होती है, जिसमें पहली पंक्ति में 5 अक्षर, दूसरी में 7 और तीसरी में 5 अक्षर होते हैं। यह संक्षेप में सारगर्भित बहु अर्थ को प्रकट करने वाली होती हैं। आचार्यश्री ने 600 से ज्यादा हायकू लिखे हैं। आचार्यश्री की ज्योतिष, दर्शन और आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी काफी रुचि थी। पठा गांव निवासी 78 साल के डॉ. सुरेंद्र जैन ने बताया कि वे कहते थे कि आचार्य के लिए ज्योतिष की शिक्षा बहुत जरूरी है, इसलिए यह सीख रहा हूं।

श्रीफल

आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज | आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज | आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी महाराज | अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर जी महाराज | स्वस्ति श्री चारुकीर्ति भट्टारक स्वामीजी

• मंगलवार, 20 फरवरी 2024 • कुल पृष्ठ - 02

आचार्यश्री के नियम

• तेल, चीनी, नमक त्याग चटाई त्याग हरी सब्जी, फल, अंग्रेजी औषधि का त्याग • सालभर 24 घंटे में एक बार सीमित ग्रास भोजन • सीमित अंजुली जल दही और सूखे मेवे का त्याग थूकने का त्याग • एक करवट में सिर्फ तखत पर शयन, बगैर तकिया-चादर-गद्दे के। • सबसे अधिक 507 दीक्षा देने वाले एकमात्र जैन संत। अनियत विहारी यानी बगैर बताए विहार करते थे।

यह तस्वीर स्कूल के दौरान की है। इसी दौरान विद्याधर की प्रवचन में रुचि बढ़ गई।

यह तस्वीर राजस्थान के अजमेर में आचार्यश्री की बिनौली के वक्त की है। इस दौरान उनके परिजनों के अलावा बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

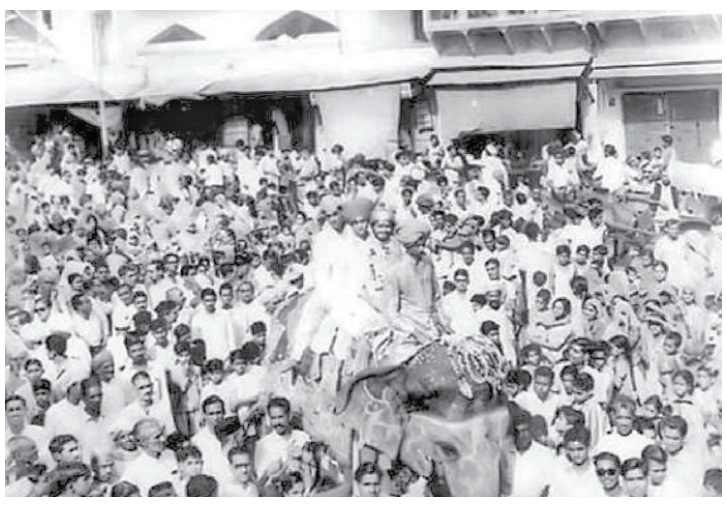

सबकुछ त्यागकर जब महावीर के रास्ते पर चल पड़े आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज। इस दौरान उनके गुरु आचार्यश्री ज्ञानसागरजी महाराज ने उन्हें दीक्षा दी थी।

तप, संयम और त्याग की प्रति मूर्ति और मृत्यु को मोक्ष उत्सव मानने वाले आचार्यश्री ने शनिवार देर रात अनंत यात्रा की ओर महाप्रयाण किया।

आचार्यश्री अनंत यात्रा पर : नहीं रहे 'वर्तमान के वर्धमान' संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ में जैन समाज के रत्न आचार्य विद्यासागर महाराज का दिगंबर मुनि परंपरा से समाधि पूर्वक मरण हो गया। आचार्य विद्यासागर महाराज श्री ने 3 दिन पहले ही समाधि मरण की प्रक्रिया को शुरू कर पूर्ण रूप से अन्न-जल का त्याग कर दिया था और अखंड मौन व्रत ले लिया था। उनका जन्म कर्नाटक के सदलगा गांव में 10 क्टूबर 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। पढ़िए विशेष रिपोर्ट।

संत आचार्य विद्यासागर महामुनिराज ने शनिवार-रविवार की रात संल्लेखनापूर्वक समाधि ले ली। छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरि तीर्थ पर उन्होंने अंतिम सांस ली। उनका अंतिम संस्कार रविवार को दोपहर में किया गया। आचार्य पिछले कुछ दिन से अस्वस्थ थे। बीते दो दिन से उन्होंने अन्न-जल का पूरी तरह त्याग कर दिया था। आचार्यश्री अंतिम सांस तक चैतन्य अवस्था में रहे और मंत्रोच्चार करते हुए उन्होंने देह का त्याग किया। समाधि के दौरान उनके पास मुनिश्री योगसागर महाराज, समतासागर महाराज, प्रसादसागर महाराज संघ सहित उपस्थित थे। हाल ही में 11 फरवरी को आचार्य विद्यासागर महाराज को गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में ब्रह्मांड के देवता के रूप में सम्मानित किया गया था। उन्होंने अब तक 500 से ज्यादा दीक्षा दी है।

कर्णाटक में हुआ था जन्म

संत आचार्य विद्यासागर महामुनिराज का जन्म कर्नाटक के सदलगा गांव में 10 अक्टूबर 1946 को शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था। मुनि विद्यासागर महज 26 वर्ष की उम्र में ही 22 नवंबर 1972 में आचार्य हो गए थे। आचार्य 24 घंटे में एक बार खड़े होकर हाथ की अंजुली बनाकर सीमित मात्रा में आहार लेते थे। सभी मौसम में लकड़ी तख्त पर सिर्फ रात्रि के समय एक करवट सोते थे। वे संपूर्ण विश्व में सबसे ज्यादा जेनेश्वरी दीक्षाएं देने वाले गुरु थे। मूक पशुओं के प्रति भी उनके मन में दया-प्रेम का भाव था। आचार्य विद्यासागर महाराज ने कई गोशालाएं बनवाईं। उनका बाल्यकाल घर तथा गांववालों के मन को जीतने वाली आश्चर्यकारी घटनाओं से भरा रहा। खेलने-कूदने की उम्र में वे माता-पिता के साथ मंदिर जाते थे। धर्म-प्रवचन सुनना, शुद्ध-सात्विक आहार करना, मुनि आज्ञा से संस्कृत के कठिन सूत्र एवं पदों को कंठस्थ करना उनके जीवन का हिस्सा था। पढ़ाई हो या गृहकार्य सभी को अनुशासन तथा क्रमबद्ध तौर पर पूरा करके ही वे संतुष्ट होते थे। बचपन से ही मुनिचर्या को देखने, उसे स्वयं आचरित करने की भावना से ही स्नान के साथ पानी में तैरने के बहाने आसन और ध्यान में बैठ जाते थे।

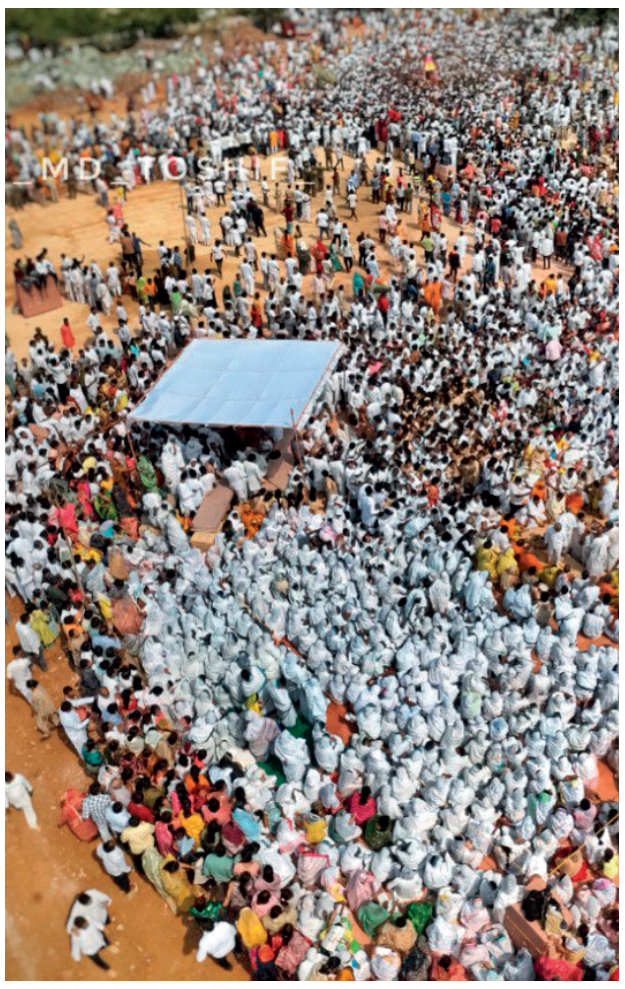

आचार्य श्री ने 500 से ज्यादा दीक्षा दी

आचार्य विद्यासागर महाराज के 3 भाई व 2 बहनें हैं। तीनों भाई में से दो मुनि हैं और भाई महावीर प्रसाद भी धर्म कार्य में लगे हुए हैं। आचार्य विद्यासागर महाराज की बहनें स्वर्णा और सुवर्णा ने भी उनसे ही ब्रह्मचर्य लिया था। आचार्य विद्यासागर महाराज अब तक 500 से ज्यादा दीक्षा दे चुके हैं।

माता-पिता ने भी ली थी समाधि

आचार्य विद्यासागर महाराज की माता का नाम श्रीमति और पिता का नाम मल्लपा था। उनके माता-पिता ने भी उनसे ही दिक्षा लेकर समाधि मरण की प्राप्ति की थी। पूरे बुंदेलखंड में आचार्य विद्यासागर महाराज 'छोटे बाबा' के नाम से जाने जाते हैं क्योंकि उन्होंने मप्र के दमोह जिले में स्थित कुंडलपुर में बड़े बाबा आदिनाथ भगवान की मूर्ति को मंदिर में रखवाया था और कुंडलपुर में अक्षरधाम की तर्ज पर भव्य मंदिर का निर्माण भी करवाया था।

देशभर में छाया शोक

आचार्य विद्यासागर के समाधिमरण के साथ ही समूचे देश में शोक छा गया है। हर कोई आचार्य से जुड़े संस्मरणों को याद कर रहा है। इंदौर सहित मालवांचल के सभी बड़े शहरों, उज्जैन, रतलाम, देवास, खंडवा आदि जगहों पर आचार्य विद्यासागर के भक्तों ने उन्हें याद किया। इंदौर में सकल जैन समाज की ओर से अपने प्रतिष्ठान बंद रखे गए तो समाधिमरण की सूचना के बाद बड़ी संख्या में जैन समाजजन छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ के लिए रवाना हो गए। आचार्य विद्यासागर महाराज के निधन पर राज्य सरकार ने भी आधे दिन का राजकीय शोक घोषित किया है वहीं कुछ स्थानों पर आचार्य विद्यासागर महाराज के अंतिम संस्कार का लाइव प्रसारण भी देखा गया। शहर के जैन समाज प्रतिनिधियों और पदाधिकारियों ने समाधिमरण पर शोक जताया है। शहर में आचार्यश्री के नाम से अनेक सेवा प्रकल्प भी चल रहे हैं।

आचार्यश्री का पूरा जीवन धर्म-पथ पर रहा : प्रधानमंत्री से लेकर आमजन तक याद कर रहे आचार्य श्री के संस्मरण

इंदौर। आचार्य विद्यासागर महाराज के समाधिमरण की सूचना पर संपूर्ण जैन समाज सहित देशभर में उनके अनुयायी शोक की लहर में हैं। पत्रिका समूह के प्रधान संपादक गुलाब कोठारी ने भी गहरा शोक जताया है। वहीं, देशभर से भी शोक संदेश आ रहे हैं। प्रधानमंत्री, कई राज्यों के मुख्यमंत्री सहित तमाम राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी शोक व्यक्त किया है।

आचार्यश्री 108 विद्यासागर महाराज का ब्रह्मलीन होना देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। लोगों में आध्यात्मिक जागृति के लिए उनके बहुमूल्य प्रयास सदैव स्मरण किए जाएंगे। वे जीवनपर्यंत गरीबी उन्मूलन के साथ-साथ समाज में स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ावा देने में जुटे रहे।

▪ **नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

आचार्य विद्यासागरजी का मध्यप्रदेश के प्रति विशेष स्नेह रहा है। मध्य प्रदेश वासियों को उनका भरपूर आशीर्वाद मिला। उनके सद् कार्य सदैव प्रेरित करते रहेंगे। उनकी संल्लेखनापूर्वक समाधि संपूर्ण जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। आचार्यजी का संयमित जीवन और विचार सदैव प्रेरणा देते रहेंगे।

▪ **डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री**

राष्ट्र संत आचार्य विद्यासागर महाराज का समाधिपूर्वक निधन का समाचार संपूर्ण जगत को स्तब्ध और निःशब्द करने वाला है। मेरे जीवन में आचार्यश्री का गहरा प्रभाव रहा। उनके जीवन का अधिकतर समय मध्यप्रदेश की भूमि में गुजरा और उनका मुझे भरपूर आशीर्वाद मिला।

▪ **शिवराजसिंह चौहान, पूर्व सीएम**

पूज्य संत शिरोमणी आचार्य विद्यासागर महाराज के संल्लेखनापूर्वक समाधि लेने की खबर न सिर्फ जैन समाज के लिए बल्कि समूचे भारत और विश्व के लिए अपूरणीय क्षति है। मैं उनको भावपूर्ण प्रणाम करता हूं, शत-शत नमन करता हूं। वे हमेशा हमारे हृदय में चेतना में और आस्था में शाश्वत रहेंगे।

▪ **कमलनाथ, पूर्व सीएम**

आचार्यश्री को दी विनयांजलि: मुनि समय सागर 22 को आएंगे, फिर दी जाएगी उन्हें आचार्य की पदवी

दिगंबर जैन मुनि परंपरा के आचार्य विद्यासागर जी महाराज को सोमवार को चंद्रगिरी तीर्थ में विनयांजलि दी गई। उनके उत्तराधिकारी मुनि समय सागर जी महाराज तीन दिन में डोंगरगढ़ स्थित चंद्रगिरी पहुंचेंगे। सादे समारोह में उन्हें आचार्य पद की पदवी देकर सिहांसन सौंपा जाएगा। वे 43 साधुओं साथ पैदल यात्रा कर संभवतः 22 फरवरी को बालाघाट से डोगरगढ़ पहुंचेंगे। साथ ही प्रमाण सागर महाराज कोलकाता शिखर जी क्षेत्र से आ रहे हैं। आचार्य श्री विद्यासागर ने 6 फरवरी को मुनि योग सागर से चर्चा करने के बाद आचार्य पद का त्याग कर दिया था।

जिस स्थान पर अंतिम संस्कार, वहीं बनेगी समाधि

नागपुर, छत्तीसगढ़, भोपाल सहित देश के बड़े ट्रस्टों से बड़ी संख्या से में लोग लोग पह पहुंचे रहे है। जैन चंद्रगृह तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष किशोर कुमार जैन और प्रतिभा स्थली के अध्यक्ष प्रकाश चंद्र जैन ने बताया कि जैन धर्म में अस्थियों को जल में विसर्जित नहीं किया जाता है। इसलिए आचार्य विद्यासागर जी की अस्थियों का खारी विसर्जन किया जाएगा। जिस स्थान पर उनका अंतिम संस्कार किया गया, वहीं समाधि बनाई जाएगी।

आचार्य श्री के आचार्य पद के नए उत्तराधिकारी निर्यापकाचार्य मुनि श्री समय सागर जी का परिचय

निर्यापकाचार्य मुनि श्री समयसागर जी महाराज अभी 65 साल के हैं। वह मूल रूप से कर्नाटक के रहने वाले हैं। जैन धर्म के लोग संत शिरोमणि आचार्य के बताए मार्गों पर ही आगे बढ़ते हैं।निर्यापकाचार्य मुनि समय सागर जी महाराज का गृहस्थ जीवन का नाम शांतिनाथ जैन था। पिता का नाम श्री मल्लप्पाजी अष्टगे (मुनिश्री मल्लिसागरजी),माता का नाम श्रीमती श्रीमंतीजी (आर्यिकाश्री समयमतिजी)है। संत शिरोमणि आचार्य जी, समय सागर जी के गृहस्थ जीवन के भाई हैं। आप का जन्म 27 अक्टूबर 1958 को हुआ था। निर्यापकाचार्य मुनि श्री समय सागर जी महाराज का जन्म कर्नाटक के बेलगांव जिले में हुआ था । आपने ब्रह्मचर्य व्रत दो मई 1975 को लिया था। 18 दिसंबर 1975 को आप की क्षुल्लक दीक्षा हुई थी । 31 अक्टूबर 1978 को एलक दीक्षा जैन सिद्ध क्षेत्र नैनागिरी जी जिला छतरपुर मध्य प्रदेश में हुई । मुनि दीक्षा 8 मार्च 1980 को जैन सिद्ध क्षेत्र द्रोणगिरी जी, छतरपुर मध्यप्रदेश में हुई । आचार्य दीक्षा गुरु आचार्य श्री विद्या सागर महाराज थे । आप को आचार्य श्री विद्या सागर महाराज ने समाधिमरण से पहले अपना आचार्य पद देकर अपना उत्तराधिकारी बना दिया था ।

जीवनकाल में दीं 507 दीक्षाएं

आचार्यश्री विद्यासागर दिगंबर मुनि परंपरा के ऐसे अकेले आचार्य थे, जिन्होंने 507 दीक्षा दी। आचार्य श्री विद्यासागरजी ने अपने जीवनकाल में 131 मुनि, 172 आर्यिका, 60 ऐलक, 141 क्षुल्लक और 3 क्षुल्लिका को दीक्षा दी है। 1972 में आचार्य बनने के बाद 8 मार्च 1980 को छतरपुर जिले के द्रोणागिरी तीर्थ में पहली मुनि दीक्षा दी। मुनि दीक्षा लेने में सबसे ज्यादा 81 मध्यप्रदेश के हैं। अकेले 20 मुनि सागर जिले से हैं। महाराष्ट्र के 15 साधक मुनि बन चुके। कर्नाटक से 9, उप्र से 9, गुजरात से 3, राजस्थान से 2 और 8 देश के अन्य राज्यों के हैं। आचार्य श्री के संघ में 8 निर्यापकाचार्य और 95 मुनि हैं। 154 आर्यिका और 10 ऐलक और 72 क्षुल्लक हैं। यानी उनका वर्तमान संघ 339 पिच्छियों का है।

कुशल शिल्पी: देशभर में बनवाए 67 मंदिर, ईंट-सरिया किसी में भी नहीं

आचार्यश्री विद्यासागर जी अपने जीवनकाल में अब तक 67 मंदिरों का पंचकल्याणक कर चुके हैं। इनमें से 52 अकेले मध्यप्रदेश में हुए। उनके विशेष प्रभाव वाले बुंदेलखंड में 17 मंदिरों की प्रतिष्ठा करवा चुके हैं। आचार्यश्री ने हजारों साल तक जैन मंदिरों को सुरक्षित रखने के लिए पत्थरों से ही हर जिनालय के निर्माण का विचार दिया। इसके बाद पूरे देश में अधिकतर बड़े जैन मंदिर पत्थरों से ही बनाए जा रहे हैं। फरवरी 2022 में कुण्डलपुर में सहस्त्रकूट जिनालय का भव्य पंचकल्याणक हुआ। मंदिरों के आधार के लिए हजारों किलो वजनी पत्थरों से नींव बनाई गई। विदिशा में शीतलनाथ जिनालय अपने आप में अनूठा है। भोपाल के हबीबगंज में भी उनकी प्रेरणा से मंदिर बन रहा है। इंदौर के रेवती रेंज में सर्वतोभद्र जिनालय और सहस्त्रकूट जिनालय में अयोध्या के श्रीराम मंदिर में उपयोग किए गए बंसी पहाड़पुर के पत्थरों का उपयोग हो रहा है।

समाज सुधारक: हथकरघा केंद्रों से सुधर रही कैदियों की जिंदगी

कभी जुर्म कर अपराध की दुनिया में कदम रखा था, आज वे मन और व्यवहार में परिवर्तन कर स्वरोजगार की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। यह बंदी केंद्रीय जेलों में चल रहे हथकरघा केंद्र से हाथों का हुनर सीखकर कुशल कारीगर बन गए हैं। यह संभव हुआ केंद्रीय जेलों में सक्रिय सम्यक दर्शन सहकार संघ द्वारा शुरू किए हथकरघा केंद्र से। सागर जेल के हथकरघा केंद्र में 110 बंदी काम कर रहे हैं। यह बंदी प्रतिदिन 250 से 300 रुपए तक कमा रहे हैं। जेल में हथकरघा केंद्र की शुरुआत 1 जनवरी 2018 को की गई थी। आचार्यश्री विद्यासागर 6 फरवरी वर्ष 2019 में सागर के इस हथकरघा पहुंचे और बंदियों से मुलाकात की थी। हथकरघा के लिए 10250 वर्ग फीट में शेड का निर्माण किया गया था। अभी केंद्र में 54 हथकरघा हैं। बंदियों के पुनर्वास के लिए जेल से छूटने पर संस्था की ओर से हथकरघा भी दिया जाता है, जिससे बंदी जेल से रिहा होने के बाद सूती कपड़े बनाकर जीवन बिता सकें।

बालिका शिक्षा के प्रणेता: पांच स्थानों पर प्रतिभा स्थली का सपना साकार

आचार्यश्री बालिकाओं की शिक्षा और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर निरंतर कार्य करते रहे। प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ बनाने का संकल्प लिया। अब प्रदेश के इंदौर, जबलपुर और टीकमगढ़ के साथ छत्तीसगढ़ के डोंगरगढ़ और उत्तरप्रदेश के ललितपुर में उनकी यह योजना साकार हो गई। बालिकाएं यहां रहकर धर्म, शिक्षा के साथ-साथ सीबीएसई पाठ्यक्रम से अपनी पढ़ाई पूरी करती हैं। शिक्षण के साथ सांस्कृतिक, खेलकूद, विविध कलाओं का ज्ञान भी दिया जाता है। प्रतिभा स्थली में अध्ययन करने के बाद छात्राएं डॉक्टर, इंजीनियर, आईएएस जैसे उच्च पदों पर आसीन हैं। जबलपुर के तिलवारा दयोदय तीर्थ परिसर में प्रतिभा स्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ 2005 में प्रारंभ हुई। छह बालिकाओं से प्रारंभ हुए प्रकल्प में अब एक हजार बालिकाएं हैं। ब्रह्मचारिणी मानद सेवाएं प्रदान कर रही है। इंदौर में 2020 में गोम्मटगिरि चातुर्मास के बाद आचार्यश्री ने कंचनबाग में विधान के दौरान इसकी प्रेरणा दी। यहां अभी 275 बालिकाएं हैं।